रावण जला या जिंदा हैं?

बी.के. भगवानभाई,शांतिवन, तलहटी

रावण काबुत बनाकर वर्ष-वर्ष जलते हैं। लेकिन थोडी सोचने की बात है। कोई भी चीज एक बार जलाने के बाद फिर नष्ट हो जाती है। दुबारा जलाने की आवश्यकता नही पड़ती। लेकिन रावण को हर वर्ष क्यों जलाते है? वह भी पिछले वर्ष से भी १ फुट बडा बनाकर जलाया जाता है इसका कारण क्या हे

वास्तव में रावण मानही मनुष्य के अंदरजो मनोविकार हैं उनका प्रतीक है। ५ विकार नारी के न ५ विकार नर के इसको ही दस शीश का रावण कहा जाता है। इस रावण अर्थात विकारों की प्रवेशता मनुष्य के अंदर द्वापरयुग से हुई है। तब से दु:ख, अशांति, भ्रष्टाचार, गरीबी आदि की शुरुवात हुई। मनुष्य का यही दुश्मन है। इसलिए उसको जलाते है। स्थुल रुपमें तो बुत बनाकर जलाते है। लेकिन जो विकार है उसको तो व्यवहार में छोड़ते नहीं। मनुष्य के अंदर जो विकार है वे दिन प्रति दिन बढ़ते ही जा रहे हैं। इसलिए उसको हर वर्ष १ फुट बडा (लंबा) बनाकर जलाते हैं। वर्तमान समय विश्व की हर आत्मा में विकारों की प्रवेशता है। इन विकारों के वश होकर न चाहते भी हर आत्मा बुरे कर्म करती है। फलस्वरुप दु:ख अशांति मिलती है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इन विकारों रुपी रावण के वश में हर आत्मारुपी सीता इस कलियुग के शोक बटिका में है। इस शोक बटिका में चारों तरफ दु:ख, अशांति लड़ाई, झगड़े ही नजर आते हैं। हर आत्मा रुपी सीता निराश है। इस दु:ख अशांति से (रावण से) छुड़ाने के लिसए निराकार परमात्मा राम को पुकार रही है। एक समय था भारत सुजलाम् सुफलाम् था। दही, दुध की नदियाँ बहती थीं। सोने, के महल थे। गाय और सिंह एक घाट पर जल पीते थे। लेकिन आज इस कलियुग में भाई-भाई एक थालि में खाना भी नही खाते हैं। पीने के लिए पानी भी नही, रहने के लिए घर भी नही। इन सब का कारण क्या है? यह ५ विकारों के वश होकर कर्म करना यही उसका कारण है।

इसलिए अब फिर से स्वयं निराकार परमात्मा जो सर्व के दिल को आराम देता है। वह इस धरतीपर आकर सभी आत्मारुपी सीताओं को इस रावण के अर्थात विकारों से छुड़ाकर अशोक बटिका में ले जानक आये है । हमे अब केवल इन विकारों पर ज्ञान और योगबल द्वारा जीत प्राप्त करनी है। विकारों पर जीत प्राप्त करने के लिए परमात्मा यही युक्तियाँ बताते है।

१. काम:- मन्सा, वाचा, कर्मणा पवित्र बनो। सर्व को आत्मा रुप में भाई-भाई की दृष्टि से देखो। तो काम विकार पर जीत पा सकेंगे। यह सबसे बड़ा महाशत्रु है।

२. क्रोधः-आप आत्माये शांतिसागर परमात्मा की संतान है। शांतिधाम आपका घर है। शांति आपका धर्म है। इस स्वरुप की स्मृति करो तो क्रोध पर जीत पा सकेंगे।

३. लोभः- सभी वस्तु वैंभव बिनाशी है। अब वापिस घर जाना है। इस स्मृति से लोभ को खत्म कर सकेंगे।

४. मोहः- सदा याद रखो करन करावनहार मेरे से करा रहा है। यह सब उसकी देन है। मै निमित्त मात्र हूँ। इस स्मृति से निरअहंकारी बन जायेंगे।

इस प्रकार हम रावण को इस तरह ज्ञान के तीर लगाकर उसके वशीभूत न होकर सदा परमात्मा याद की शाक्ति से उस जलना है। जब हम दैवी गुणों की धारणा करेंगे, इन विकारों के वश नही होंगे तब ही कहेंगे रावण जलाया। अगर स्थूल रुप में केवल बुत बनाकर जलाया और विकारों के वश होकर कर्म किया तो सच्चा सच्चा दशहरा नहीं हुआ। दशहरा माना ही दश (दश शीश का रावण) हरा (माना हराना) तो विकारों पर जीत पाना है। तो ही दिवाली अर्थात हमारे घर में खुशीयों के दिन, भरपूरता के दिन आयेंगे लक्ष्मी घर आयेगी। फिर रावण को जलाने की आवश्यकता नही।

इसलिए अब हमे अपने अंदर जो विकार हैं। उसको ज्ञान योग द्वारा जलाना है। तो समझो रावण जल गया। तो इस वर्ष हमे विकारों रुपी दुश्मन को पूरी तरह जलाकर विश्व में फिर से शांति, सुख संपन्न दैवी राज्य स्थापन करने का सहयोग देना है। यही है सच्चा सच्चा दशहरा मनाना

ओम् शान्ति